हिन्दुस्तान
वाराणसी • सोमवार • 17 फरवरी 2014

'वेणीसंहार' का किया गया मंचन

वाराणसी। महाकवि भट्टनारायण रचित संस्कृत रुपक 'वेणीसंहार' का मंचन ने दर्शकों को भारतीय नाट्य परम्परा की महानता से परिचित कराया। 'छाऊ' के प्रयोग ने नाटक की प्रस्तुति को और सशक्त बना दिया। आयोजन ज्ञान प्रवाह और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से किया गया था। नाट्य निर्देशन प्रो.युगल किशोर मिश्र, शशधर आचार्य और डॉ.चन्द्रकांता राय ने किया।

अमर उजाला

छऊ के तत्वों को पिरोया 'वेणी संहार' में

महाकवि भट्टनारायण रचित संस्कृत नाटक में भीम ने पूरी की द्रौपदी की प्रतिज्ञा

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। अपमान से क्षुब्ध द्रौपदी की दुर्योधन के रक्त से केश बांधने की प्रतिज्ञा भीम ने पूर्ण की। नागरी नाटक मंडली के मुरारीलाल प्रेक्षागृह में रविवार की शाम महाकवि भट्टनारायण रचित संस्कृत नाटक वेणीसंहार का इसके साथ ही पटाक्षेप हो गया। नाटक में पांडवों के वनवास और महाभारत की कथा को छऊ लोक नृत्य तत्वों से सजाकर प्रस्तुत किया गया लेकिन संस्कृत नाट्यशैली का भी पूरा खयाल रखा गया। प्रस्तुति ज्ञान प्रवाह के कलाकारों ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेंद्र के सहयोग से की।

संस्कृत नाट्य परंपरा के अनुसार नाट्य की शुरुआत पूर्वरंग से हुई। कौरवों से जुए में पराजित पांडवों की ओर से भगवान कृष्ण पांच गांव देने पर कौरवों से समझौते का प्रस्ताव लेकर गए लेकिन अपमान से क्षुब्ध द्रौपदी ने केश खुले रखे हैं। वह इस संधि के पक्ष में नहीं है और भीम ने द्रौपदी की मनोदशा को देखकर प्रण लिया कि वे दुर्योधन की जांघ तोड़कर उसके रक्त से द्रौपदी की वेणी बांधेंगे। महाभारत के पात्रों के जरिए इस कथा अभिनय के माध्यम से बखूबी दर्शकों के बीच पेश किया गया। संवाद संस्कृत में होने के बावजूद अभिनय, संगीत तथा दृश्य बंधों के मिलन से मुकम्मल बात दर्शकों तक पहुंची और वे तालियां बजाकर कलाकारों का हौसला बढ़ाते रहे। कलाकारों ने कला केंद्र की ओर से आयोजित कार्यशाला में छऊ लोकनृत्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया था, लिहाजा पूवरंग में इस नृत्य शैली का अंदाज देखने को मिला। नाटक में भी कलाकारों के चलने का अंदांज छऊ पर ही आधारित दिखा। प्रो. युगल किशोर मिश्र, शशधर आचार्य, डा. चंद्रकांता राय निर्देशित इस नाटक में भावना पांडेय, मनीष राय, संचिता गोस्वामी, देबोजीत गोस्वामी, अर्पित शिधोरे, शिवशंकर पाठक, ज्ञानेंद्र यादव ने प्रमुख भूमिकाएं निभाई। हरिप्रसाद पौड्याल, बैकुंठ अधिकारी, रविशंकर शुक्ल, अष्टभुजा मिश्र ने संगीत पक्ष को मजबूत किया। कला केंद्र के प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी, एनडी शर्मा, विमला पोद्दार, प्रो. कमल गिरी, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष शंकर सुहैल आदि को सम्मानित किया गया।

नागरी नाटक मंडली में मंचित नाटक वेणी संहार का भावपूर्ण दृश्य।

मंच पर जीवंत हुए महाभारत के प्रसंग

ज्ञान प्रवाह द्वारा नागरी नाटक मण्डली में आयोजित संस्कृत नाटक का दृश्य।

- ज्ञान प्रवाह द्वारा कवि भट्टनारायण की रचना वेणी संहार का मंचन

वाराणसी : नागरी नाटक मंडली के मंच पर रविवार की शाम महाभारत के प्रसंग जीवंत हुए। इसमें कलाकारों के अभिनय और मंचीय परिवेश ने दर्शकों को बांधे रखा। जज्बातों पर आघात, संकल्पों की बात और पात्रों के द्वंद्व चेहरे तक से झलकतें नजर आए।

मौका था महाकवि भट्टनारायण द्वारा लिखे गए संस्कृत रूपक वेणीसंहार के मंचन का। पांडवों का पांच गांव पर भी संधि प्रस्ताव कौरवों ने ठुकराया। दुर्योधन की पत्नी द्वारा द्रौपदी के खुले केशों पर ताने ने भी आग लगाई। इसके साथ ही दुर्योधन के जांघों को गदा प्रहार से भंग करने के संकल्प की आंच में पूरा कथानक तपता रहा। इसकी पूर्ति और द्रौपदी के वेणी बंधन के साथ ही समापन हुआ। प्रो. युगल किशोर मिश्र, शशिधर आचार्य व डा. चंद्रकांता राय के निर्देशन में अर्पित शिधोरे, भावना पांडेय, हर्ष गुप्ता, शिल्पा सिंह, मनीष राय, ज्ञानेंद्र यादव आदि ने अभिनय किया। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने और प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी, युगल किशोर मिश्र संयोजन किया।

जनसंदेश टाइम्स
वाराणसी, सोमवार 17 फरवरी 2014

नागरी नाटक मण्डली प्रेक्षागृह में गूंजे महाकवि भट्टनारायण के महाभारत से संबंधित संवाद

'वेणीसंहार' से जीवंत हुआ महाभारत का दृश्य

नाट्य मंचन

ज्ञान प्रवाह व इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की ओर से हुआ आयोजन

वाराणसी। नागरी नाटक मण्डली प्रेक्षागृह रविवार को महाकवि भट्टनारायण रचित महाभारत से संबंधित संवादों से गूंजता रहा। मौका था वहां आयोजित महाकवि प्रणीत 'वेणी संहार' नाट्य मंचन का। इस दौरान ऐसा लग रहा था, जैसे महाभारत का दृश्य जीवंत हो गया हो। इसका आयोजन ज्ञान प्रवाह की ओर से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सहयोग से किया गया था।

नाटक के दौरान भानुमति का पाण्डवों द्वारा जुए में द्रौपदी को हार जाना, द्रौपदी के खुले बालों पर भानुमति का व्यंग करना, भीमसेन की दुर्योधन को मारने की प्रतिज्ञा, अश्वत्थामा का मूर्छित होना, भीमसेन की विजय गर्जना व दुर्योधन को मारने के बाद द्रौपदी के केश संवारने के प्रसंग को अर्पित शिधोरे, हर्ष गुप्ता, भावना पाण्डेय, अर्पणा तिवारी, अभिषेक सिंह, श्रद्धा तिवारी, अंजना, मनीष कुमार राय, अभिषेक चौबे, आरती गुप्ता, सुनीता यादव, संचिता गोस्वामी व देवजीत गोस्वामी आदि कलाकारों ने अपने अभिनय से जीवंत किया। नाट्य मंचन में वादन, नृत्य, गायन ने भी खूब रंग जमाया। इसके पूर्व शुभारंभ मुख्य अतिथि यूपी संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष शंकर सुहेल ने गंगा, कलश पूजन के बाद दीप प्रज्वलन कर किया। इस मौके पर ज्ञान प्रवाह की ट्रस्टी श्रीमती विमला पोद्दार, निदेशक प्रो. कमल गिरी, आचार्य डॉ. नीलकण्ठ, पुरुषोत्तम जोशी, प्रो. युगल किशोर मिश्र व बीएचयू, काशी विद्यापीठ व अन्य महाविद्यालयों के अध्यापक और छात्र आदि मौजूद रहे। **संवाददाता**

नागरी नाटक मंडली प्रेक्षागृह में 'वेणीसंहार' का नाट्य मंचन करते कलाकार

आज

वाराणसी, १७ फरवरी, २०१४ ४

संस्कृत रंगपरम्पराके पुनराविष्कारके लिए पारम्परिक रंगशैलियोंका प्रशिक्षण आवश्यक

भारतीय पारम्परिक रंगपरम्पराके पुनराविष्कारके लिए संस्कृत रंगमंचका प्रयोग आवश्यक है। दक्षिणमें कुडियाट्टम द्वारा संस्कृत नाटककी परम्परा जीवित रही है किन्तु उत्तर भारतमें इस कार्यको करनेके लिए उड़ीसाकी छाऊ शैलीपर आधारित प्रशिक्षण बहुत उपयोगी है। छाऊमें नाट्यशास्त्रमें निरूपित रंगतत्व प्रचुर मात्रामें विद्यमान है और वे उत्तर भारतकी भाषाओंके अनुकूल भी है। अतएव संस्कृत परम्पराके पुनराविष्कारके लिए छाऊका प्रशिक्षण अत्यधिक उपयोगी है। यह विचार छाऊ शैलीके प्रख्यात आचार्य श्री शशधर आचार्यने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा ज्ञान प्रवाहकी ओरसे आयोजित चार सप्ताह व्यापिनी कार्यशालाके समापनपर व्यक्त किये। कार्यशालाका आयोजन ज्ञान-प्रवाहमें किया गया। इसमें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, काशी विद्यापीठ, आर्यमहिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय आदि संस्थाओंसे चुने गये। प्रतिभागियोंको शशधर आचार्यके द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशालामें नाट्यशास्त्रमें वर्णित व्यायाम पाद-स्थिति, गति-प्रचार, स्थानक, उफाली, भंगिमा, हस्तमुद्रा तथा पदचालन आदि तत्वोंका छाऊकी परम्पराके अनुसार प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

अमर उजाला कॉम्पैक्ट

वाराणसी, रविवार, 16 फरवरी 2014

संस्कृत नाटक 'वेणीसंहार' का मंचन आज

वाराणसी। छाऊ नृत्य शैली के विद्वान शशधर आचार्य ने शनिवार को पारंपरिक रंग शैलियों के प्रशिक्षण पर जोर दिया। कार्यशाला के समापन पर उन्होंने संस्कृत रंग परंपरा के पुनरुत्थान की सलाह दी। इसमें प्रशिक्षित कलाकार 16 फरवरी को नागरी नाटक मंडली के प्रेक्षागृह में संस्कृत नाटक 'वेणीसंहार' का मंचन करेंगे। शशधर आचार्य ने गति-प्रचार, भंगिमा, हस्मुद्रा, पद चालन जैसे नाट्य तत्वों को प्रशिक्षुओं को सिखाया।

SUN DAY
अमर उजाला
वाराणसी | रविवार | 16 फरवरी 2014

कार्यशाला में पारंपरिक रंग शैलियों के प्रशिक्षण पर जोर

वाराणसी (ब्यूरो)। छाऊ नृत्य शैली के विद्वान शशधर आचार्य ने शनिवार को पारंपरिक रंग शैलियों के प्रशिक्षण पर जोर दिया। सामने घाट स्थित ज्ञान प्रवाह में 28 दिनी कार्यशाला के समापन अवसर पर उन्होंने संस्कृत रंग परंपरा के पुनरुत्थान की सलाह दी। इस कार्यशाला में प्रशिक्षित कलाकार 16 फरवरी की शाम नागरी नाटक मंडली के प्रेक्षागृह में संस्कृत नाटक 'वेणीसंहार' का मंचन करेंगे।

संस्कृत नाटक 'वेणीसंहार' का मंचन आज

इस कार्यशाला में शशधर आचार्य ने गति-प्रचार, भंगिमा, हस्मुद्रा, पद चालन जैसे नाट्य तत्वों को प्रशिक्षुओं को सिखाया। उन्होंने कहा कि भारतीय रंग परंपरा के उत्थान के लिए संस्कृत रंगमंच का प्रयोग जरूरी है। इससे पहले शशधर का अंगवस्त्रम से सम्मानित किया गया। इस मौके पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला कोश के अध्यक्ष डॉ. एनडी शर्मा, डॉ. सुधीर लाल, डॉ. सुषमा जाटू, डॉ. चंद्रकांता राय, प्रो. युगल किशोर मिश्र उपस्थित थे।